

---

# Shri Chandika Stuti

श्रीचण्डिकास्तुतिः

## Document Information

---

Text title : Chandika Stutih

File name : chaNDikAstutiH.itx

Category : devii, devI, durgA, aShTaka

Location : doc\_devii

Author : Durgaprasad DvivedI

Transliterated by : Rajani Arjun Shankar

Proofread by : Rajani Arjun Shankar

Latest update : October 30, 2020

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 30, 2020

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Shri Chandika Stuti

---

### श्रीचण्डिकास्तुतिः

---



विविक्ततर-गोमती-जठर-मध्य-सिद्धाश्रमां  
पुरोगत-सरोवर-स्फुरदगाध-पाथश्रष्टाम् ।  
विशाल-तलतुङ्ग-भूलुलित-निम्बमूलालयां  
भजामि भयभण्डिकां सपदि चण्डिकामम्बिकाम् ॥ १ ॥

न लक्ष्य-घटनाश्रयां न च विशेष-वेशभावडां  
घटानुकृति-गोमती-वलन-भाव्यमानास्पष्टाम् ।  
नमज्जन-मनोरथारथन-थारु-चिन्तामणिं  
भजामि भयभण्डिकां सपदि चण्डिकामम्बिकाम् ॥ २ ॥

निरन्तर-समुल्लसत्कमल-कीर्ण-पाथोजिनी-  
प्रतान-धनसम्पदा कमपि सम्मदं तन्वतीम् ।  
त्रिकोण-सरसीमयीं, परिणतिं पुरो भिन्नतीं,  
भजामि भयभण्डिकां सपदि चण्डिकामम्बिकाम् ॥ ३ ॥

अनुग्रह-रसच्छटामिव सरःश्रियं यान्तिडे  
विकासयति, पद्मिनीदल-सलस्रसन्धानिताम् ।  
प्रतिक्षाण-समुन्मिषत्प्रमद-मेदुरां तामडं,  
भजामि भयभण्डिकां सपदि चण्डिकामम्बिकाम् ॥ ४ ॥

प्रयण्डयति विडम्, ञटिति भाण्डयत्यापदः  
सुमण्डयति वाक्कलां, सदसि दण्डयत्युद्धतान् ।  
करण्डयति रोदसी, गुण-समृद्धिभिर्या छि तां  
भजामि भयभण्डिकां सपदि चण्डिकामम्बिकाम् ॥ ५ ॥

श्रुताऽभिलषिता, मता, सुकलिता, समभ्यर्थिता  
सुधा-पृषत-वर्षिभिर्नवनवैर्वथोभिः स्तुता ।  
जथाय भलु कल्पते बहुविधादृता, तामडं  
भजामि भयभण्डिकां सपदि चण्डिकामम्बिकाम् ॥ ६ ॥

धतस्तत उदित्वर-व्रततिनध्व-वृक्षावली-

लुलद्विडग-मण्डली-मधुरराव-संसेविताम् ।

स्मलत्सुसुम-सौरभ-प्रसर-पूर्यमाशाश्रमां

भजामि भयभण्डिकां सपदि चण्डिकामम्बिकाम् ॥ ७ ॥

द्विषत्सुल-कृपाणिकां, कुटिलकाल-विध्वंसिकां,

विपद्मन-कुठारिकां, त्रिविध-दुःख-निर्वासिकाम् ।

कृपाकुसुम-वाटिकां, प्रगत-भारती-भासिकां,

भजामि भयभण्डिकां सपदि चण्डिकामम्बिकाम् ॥ ८ ॥


अन्नाण्डाधिक-देहापि गोमती-तीर-चङ्कमा ।

जयाय भजतां भूयाश्चण्डिका चण्ड-विङ्कमा ॥ ९ ॥


धति दुर्गाप्रसादद्विवेदीविरचिता चण्डिकास्तुतिः समाप्ता ।

Encoded and proofread by Rajani Arjun Shankar

---

——  
*Shri Chandika Stuti*

pdf was typeset on October 30, 2020

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

